प्राक्कथन

सुदर्शन भाटिया आधुनिक काल के कथाकार के रूप में विख्यात हैं। हिमाचल प्रदेश के सुदर्शन भाटिया जी सेवानिवृत्त अभियंता हैं। उन्होंने देशभर की हिंदी पत्र-पत्रिकाओं में निरंतर लेखन किया है। लघुकथाएँ, कहानियाँ, उपन्यास, जीवनी, इतिहास धर्म एवं संस्कृति, पर्यावरण, प्राकृतिक चिकित्सा, राजनीति, रिपोर्टिंग, विज्ञान ज्ञान क्विज, योगशिक्षा आदि विषयों पर लेखन किया है।

विषय-चयन :

उपन्यास आधुनिक युग की देन है। माना जाता है कि अप्रत्यक्ष रूप से अंग्रेजी उपन्यास केप्रभाव से हिंदी उपन्यास साहित्य का प्रारंभ हुआ। प्रेमचंदपूर्व युग में सामाजिक उपन्यासों का लेखन हुआ है। इन उपन्यासों में उपदेश की प्रवृत्ति विद्‌यमान थी। उपन्यास को गद्‌य का महाकाव्य कहा जाता है।

मुझे कथासाहित्य पढ़ने की रूचि बचपन से ही है। एम. ए. की परीक्षा में 'कमलेश्वर एवं श्रीलाल शुक्ल' जैसे आधुनिक उपन्यासकारों के उपन्यास अध्ययनार्थ थे। आधुनिक उपन्यासों में 'सामाजिक उपन्यासों' के प्रति मेरी रूचि बढ़ गई। सुदर्शन भाटिया के 'कल्लो' और 'सुलगती बर्फ' सामाजिक उपन्यास की ओर मेरा विशेष ध्यान गया। अध्ययन के उपरांत मेरे मन में विशेष उत्सुकता जाग उठी। इस विषय पर मेरे शोध-निर्देशक श्रद्‌धेय गुरू डॉ. मोहन जाधव जी से विचार विमर्श कर एम. फिल. लघु-शोध-प्रबंध के लिए मैंने ''सुदर्शन भाटिया के सामाजिक उपन्यासों का तात्विक अनुशीलन'' ('कल्लो' और 'सुलगती बर्फ' के संदर्भ में) विषय निश्चित किया। अनुसंधान के आरंभ में मेरे मन में सुदर्शन भाटिया के विवेच्य उपन्यासों के बारे में निम्नांकित प्रश्न उपस्थित हुए -

1. सुदर्शन भाटिया का व्यक्तित्व एवं कृतित्व कैसा है?
2. भाटिया जी के आलोच्य उपन्यासों की कथावस्तु क्या है?
3. सुदर्शन भाटिया के उपन्यास साहित्य में पात्र तथा चरित्र-चित्रण के कौन-कौन से विविध रूप मिलते हैं?

4. आलोच्य उपन्यासों के संवाद कैसे हैं?

5. आलोच्य उपन्यास में देशकाल-वातावरण कैसे चित्रित किया है?

6. भाटिया जी के उपन्यासों की भाषाशैली कैसी है?

7. आलोच्य उपन्यासों का उद्देश्य क्या है?

8. हिंदी उपन्यास साहित्य के विकास में सुदर्शन भाटिया का क्या योगदान रहा है?

इन सभी सवालों का जवाब प्राप्त करने का प्रयास मैंने अपने लघु-शोध-प्रबंध में किया है और अंत में उपसंहार के रूप में दिया है।

अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से मैंने अपने लघु-शोध-प्रबंध को निम्नलिखित सात अध्यायों में विभाजित किया है -

प्रथम अध्याय - "सुदर्शन भाटिया का व्यक्तित्व एवं कृतित्व"

सामान्यतः किसी भी साहित्यिक कृति के सम्यक अनुशीलन के लिए उस साहित्यकार के व्यक्तित्व का अध्ययन करना आवश्यक होता है। प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत सुदर्शन भाटिया के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का संक्षिप्त परिचय दिया है। इसमें मैंने भाटिया जी के व्यक्तित्व परिचय के अंतर्गत जन्म, माता-पिता, बचपन, परिवार, शिक्षा, विवाह, नौकरी आदि का विवेचन किया है। साथ ही मैंने इनके साहित्यिक कृतित्व का भी परिचय दिया है। अध्याय के अंत में प्राप्त निष्कर्ष दिए गए हैं।

द्वितीय अध्याय - "आलोच्य उपन्यासों का कथानक"

इस अध्याय में कथावस्तु का स्वरूप तथा भाटिया जी के 'कल्लो' और 'सुलगती बर्फ' इन दो उपन्यासों की कथावस्तु का विवेचन किया गया है। इसमें आलोच्य उपन्यासों की कथावस्तु की समीक्षा का भी संक्षेप में समावेश किया है। अंत में निष्कर्ष प्रस्तुत किया है।

तृतीय अध्याय - "आलोच्य उपन्यासों में चित्रित पात्र-परियोजना का अनुशीलन"

इस अध्याय के अंतर्गत मैंने पात्र एवं चरित्र-चित्रण के महत्त्व तथा चरित्र-चित्रण के भेद को प्रस्तुत किया है। इसके अलावा प्रमुख तथा गौण पात्रों का विवेचन प्रस्तुत अध्याय में मार्मिकता से किया है। अंत में प्राप्त निष्कर्ष दिए गए हैं।

चतुर्थ अध्याय - "संवाद या कथोपकथन"

इस अध्याय के अंतर्गत मैंने आलोच्य उपन्यासों के संवादों का विवेचन किया है।

पंचम अध्याय - "आलोच्य उपन्यासों में चित्रित देशकाल-वातावरण"

इसमें भाटिया जी के आलोच्य उपन्यासों में जो परिवेश चित्रित किया है। उसका विवेचन किया है। अंत में अध्याय का निष्कर्ष प्रस्तुत किया है।

षष्ठ अध्याय - "आलोच्य उपन्यासों की भाषाशैली"

इसमें भाटिया जी के उपन्यासों में प्राप्त तत्सम, तद्भव, अरबी, फारसी, अंग्रेजी इसके साथ ही साथ शब्द पुनरुक्तियाँ, मुहावरे आदि भाषा प्रयोगों को प्रस्तुत किया है। वर्णनात्मक, प्रतीकात्मक, प्रश्नोत्तर तथा संवाद आदि शैलियों के प्रयोगों का विवेचन-विश्लेषण किया है। अंत में निष्कर्ष दिए गए है।

सप्तम अध्याय - "आलोच्य उपन्यासों का उद्देश्य"

इसमें आलोच्य उपन्यासों का उद्देश्य तथा उपन्यास साहित्य में भाटिया जी का योगदान आदि का विवेचन-विश्लेषण किया है। अध्याय के अंत में निष्कर्ष प्रस्तुत किया है।

उपसंहार -

सभी अध्यायों के अंत में मैंने उपसंहार के रूप में अपना निष्कर्ष प्रस्तुत किया है, जो उपन्यास के पूरे अध्याय का सार है।

संदर्भ ग्रंथ सूची -

प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध के लेखन कार्य में सहायक आधार ग्रंथ, संदर्भ ग्रंथ, शब्दकोश तथा पत्र-पत्रिकाओं की सूचि इसके अंतर्गत दी गई है।

ऋणनिर्देश

प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध के लेखन कार्य में जिन विद्वानों तथा हितचिंतकों ने प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप में मुझे सहयोग दिया, उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करना मैं अपना प्रधान कर्तव्य समझती हूँ।

प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध निर्देशक श्रद्धेय गुरूवर्य प्रा. डॉ. मोहन जाधव, सहयोगी प्राध्यापक, हिंदी विभाग, छत्रपति शिवाजी कॉलेज, सातारा के पथ-निर्देशन का फल है। मुझे बी. ए. से लेकर एम. ए. तक आपका मार्गदर्शन मिलता रहा। एम. फिल. उपाधि के लिए शोध-निर्देशक के रूप में आपकी मौजूदगी मेरे लिए बड़ी भाग्य की बात है। आपसे मुझे हमेशा प्रेम, प्रेरणा तथा उचित मार्गदर्शन मिलता रहा है। मैं आप तथा आपके परिवारजनों के प्रति हृदय से कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ। साथ ही आदरणीय गुरूवर्य जयवंत जाधव (सातारा), डॉ. भरत सगरे (सातारा), खिलारे सर, माने मॅडम, पठाण मॅडम तथा सुर्वे मॅडम (सातारा) आदि का सहयोग तथा मार्गदर्शन समय-समय पर मिलता रहा। अत: उन सभी के प्रति मैं कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ।

मेरे लिए अपार कष्ट उठानेवाली मेरी माताजी सौ. सुमन कडव और पिताजी श्री.सदाशिव कडव का आशीर्वाद मुझे सदैव सत्कार्य के लिए प्रेरणा देता रहा है। मैं आजन्म उनके ऋण में रहूँगी। साथ ही परिवार के भाई-बहन तथा जीजाजी आदि ने मुझे शिक्षा के प्रति रूचि बढ़ाई। मुझे हर समय प्रोत्साहन दिया। अत: मैं इन सभी की आजीवन ऋणी हूँ।

मेरे लघु-शोध-प्रबंध की पूर्ति हेतु प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप में जिन मित्र परिवार का सहयोग मिला वे इस प्रकार है - निलम सावंत, स्वाती साबणे, लीना कांबळे तथा शीतल कदम आदि का योगदान महत्त्वपूर्ण रहा है। अत: इन सभी हितचिंतकों के प्रति मैं आभार प्रकट करती हूँ।

संदर्भ ग्रंथों के बिना तो कोई भी लघु-शोध-प्रबंध पूरा नहीं होता। अत: मैं छत्रपति शिवाजी काँलेज, सातारा के ग्रंथालय तथा लाल बहादुर शास्त्री, कॉलेज के ग्रंथालय आदि के ग्रंथपाल तथा कर्मचारी वर्ग के प्रति धन्यवाद प्रकट करती हूँ।

अंत में इस लघु-शोध-प्रबंध का संगणक टंकन अत्यंत सुचारु रूप से करनेवाले मे.रिलॅक्स सायक्लोस्टायलिंग, सातारा के श्री. मुकुंद ढवले और श्री. कुलकर्णी ने अत्यंत तत्परता के साथ करके लघु-शोध-प्रबंध प्रस्तुति के लिए उचित योगदान दिया है। अंत में उनके प्रति आभारी हूँ।

अत: मैं इन सभी के प्रति कृतज्ञता प्रकट करती हूँ। मैं इस लघु-शोध-प्रबंध को अत्यंत विनम्रता से विद्वानों के सामने परीक्षणार्थ प्रस्तुत करती हूँ।

SJkadav

शोध-छात्रा

(कु. सुजाता सदाशिव कदव)

स्थान : सातारा

तिथि : 28/12/2011